ले. कर्नल मनजीत सिंह

सैन्य अध्ययन के साथ ही भाया अमेरिका

जिम फ़िशर-टॉम्पसन

भारतीय सेना की पंजाब रेजिमेंट के ले.कर्नल मनजीत सिंह क्वांटिको, वर्जिनिया स्थित मैरीन कोर यूनिवर्सिटी के कमांड एंड स्टाफ़ कॉलेज में एक वर्ष की उच्च शिक्षा पाने के लिए चुने गए 26 विदेशी विद्यार्थियों में से एक हैं।

ग्रेजुएट डिग्री स्तरीय पाठ्यक्रम के छात्र मनजीत सिंह की यह पहली अमेरिका यात्रा है। वह कहते हैं, ''यह एक दुर्लभ किस्म का अनुभव है।'' वह बताते हैं कि यहां उन्हें अमेरिकी लोगों और संस्कृति के बारे में काफी कुछ जानने को मिल रहा है, युद्ध और संघर्ष के बारे में अमेरिकी और अन्य सेनाओं की सोच से भी परिचय हो रहा है।

मनजीत को कमांड एंड स्टाफ़ कॉलेज में जो बात सबसे अच्छी लगती है वह यह है कि इसमें उनके जैसे अंतरराष्ट्रीय अधिकारियों को शामिल किया जाता है। ''यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम भी वही लोकतांत्रिक मूल्य और व्यावसायिक पाठ सीख रहे हैं जो अमेरिकी अधिकारी सीखते हैं। हमें बाहरी लोग नहीं, हमारे क्षेत्रों में सुरक्षा और स्थायित्व उपलब्ध करवाने के अभियान में सहयोगी माना जाता है।''

''अमेरिकी शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित होने का यह अवसर केवल मुझे ही नहीं, मेरे सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों को प्रभावित करेगा।'' वह कहते हैं, ''भारतीय सिख के तौर पर मैं एक अलग संस्कृति से आया व्यक्ति हूं जो अमेरिका में पढ़ने ही नहीं, अमेरिकियों के साथ रहने भी आया है।'' अमेरिकी परिवारों के साथ मिलते-जुलते हुए उन्होंने पाया कि ''परिवार और लोकतांत्रिकता के जिन मूल्यों को हम बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं, वे अमेरिकियों को भी बहुत प्रिय हैं।''

मनजीत सिंह को इस प्रशिक्षण के लिए अमेरिकी विदेश और रक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम इंटरनेशनल मिलिट्री एजुकेशन एंड ट्रेनिंग फंड के माध्यम से चुना गया। उत्तरी वर्जिनिया के क्वांटिको मैरीन बेस के एक कोने में स्थित मैरीन कोर यूनिवर्सिटी के परिसर में चार प्रोफ़ेशनल स्कूल हैं जो युद्ध, नीति, रणनीति; राष्ट्रीय सुरक्षा और संयुक्त युद्ध; क्षेत्रीय अध्ययन; संस्कृति और अंतर एजेंसी कार्य संचालन और संचालन योजनाएं जैसे विषयों में पाठ्यक्रम चलाते हैं। क्वांटिको परिसर में 480 विद्यार्थी रहते हैं और उनमें से लगभग आधे, 196 कमांड एंड स्टाफ़ कॉलेज में मनजीत सिंह के सहपाठी हैं।

मनजीत सिंह बताते हैं कि कक्षाओं में इराक और अफगानिस्तान के सैन्य अभियानों सहित अन्य संघर्षों से जुड़े उदाहरण ''व्यापक, सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किए जाते हैं, न कि एकतरफा ढंग से जैसे अक्सर मीडिया उन्हें प्रस्तुत करता है।'' वह मानते हैं कि यह महत्वपूर्ण है, ''हम देखते हैं कि इन अभियानों में नागरिक/सैन्य सम्बन्ध और मानवीय कार्रवाई को प्राथमिकता दी जाती है। हम पाते हैं कि मीडिया द्वारा अमेरिकी सेनाओं को आक्रमणकारी और जबर्दस्ती घुस बैठने वाली बताना सही नहीं है।''

मनजीत सिंह मैरीन कोर यूनिवर्सिटी में बिताए समय के लिए खुद को कृतज्ञ मानते हैं। वह कहते हैं, ''अमेरिकी शिक्षा प्रणाली का यह अवसर ऐसी चीज़ है जिसे मैं अपने साथ भारत ले जाना चाहूंगा।''

मैरीन कोर यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष डॉनल्ड गार्डनर मनजीत सिंह से सहमत हैं कि एक अच्छी सेना को ताकत और रणनीति के अलावा कौशल की भी ज़रूरत पड़ती है। अवकाशप्राप्त मैरीन मेजर जनरल और वियतनाम युद्ध में भाग ले चुके डोनाल्ड कहते हैं, ''मैरीन कोर में माना जाता है कि शिक्षा का क्रम निरंतर नया बना रहना चाहिए। हमारा पूरा ध्यान भविष्य के लिए कौशल सिखाने पर केंद्रित रहता है। एक आधुनिक सेना के लिए भविष्य के नेतृत्व का निर्माण बहुत आवश्यक है। इसके अलावा मिलजुलकर की जाने वाली सैन्य कार्रवाइयां भी युद्ध रणनीति का अंग बनती जा रही हैं।''

डोनाल्ड गार्डनर अपने छात्रों को बताते हैं, ''हम आपको अपनी नेतृत्व क्षमता विकसित करने, युद्ध लड़ने का कौशल बढ़ाने और संसारभर के अपने साथी छात्रों के साथ अनुभवों और समस्याओं पर चर्चा करके समस्याएं सुलझाने की दक्षता बढ़ाने का अवसर उपलब्ध करवाते हैं।'' वह बताते हैं कि मैरीन कोर यूनिवर्सिटी आज भी ब्रिगेडियर जनरल जे. सी. ब्रेकिनरिज द्वारा स्थापित मार्गदर्शक सिद्धांतों का पालन कर रही है जो 1934 में मैरीन कोर यूनिवर्सिटी के कमांडेंट थे। सैन्य शिक्षा की अपनी अवधारणा स्पष्ट करते हुए ब्रेकिनरिज ने कहा था, ''मेरी अभिलाषा है कि मैरीन अधिकारी महत्वाकांक्षा, पहल करने वाले और मौलिकता से भरे हों- ये गुण केवल उदार और व्यापक विचार से आ सकते हैं, इसके लिए ज़रूरी है कि विचार पूर्व उदाहरणों से भिन्न हो, उन पर अनिवार्य रूप से दूसरों की छाप न हो।''

जिम फ़िशर-टॉम्पसन यूएसइनफ़ो के कार्यालय लेखक हैं।
http://usinfo.state.gov